आरती श्री विष्णुजी की

ओउम् जय जगदीश हरे, स्वामी जय जगदीश हरे ।
भक्त जनो के संकट, क्षण में दूर करे ।।ओम्....

जो ध्यावे फल पावे, दुख विनसे मन का ।
सुख सम्पति घर आवे, कष्ट मिटे तन का ।।ओम्....

मात-पिता तुम मेरे, शरण गहूं मैं किसकी ।
तुम बिन और न दूजा, आस करूंजिसकी ।। ओम्....

तुम पूरण परमात्मा, तुम अन्तर्यामी ।
पारब्रह्म परमेश्वर, तुम सबके स्वामी ।। ओम्....

तुम करुणा के सागर, तुम पालन कर्ता ।
मैं मूरख खल कामी, कृपा करो भर्ता ।। ओम्....

तुम हो एक अगोचर, सबके प्राणपति ।
किस विधि मिलूं दयामय, तुमको मैं कुमति ।।ओम्....

दीनबन्धु दुःखहर्ता, तुम रक्षक मेरे ।
करुणा हस्त उठाओ, द्वार पड़ा तेरे ।। ओम्....

विषय विकार मिटाओ, पाप हरो देवा ।
श्रद्धा भक्ति बढ़ाओ, सन्तन की सेवा ।। ओम्....

श्री जगदीश जी की आरती, जो कोइ नर गावे ।
कहत शिवानंद स्वामी, सुख संपति पावे ।।

।। श्री विष्णु स्तुति ।।

शान्ताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशं,

विश्वाधारं गगनसदृशं मेघवर्णं शुभांगम् ।
लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं योगिभिर्ध्यानगम्यं,
वन्दे विष्णुं भवभयहरं सर्वलोकैकनाथम् ।।

विवरण

सम्पूर्ण जगत के ईश्वर ओंकारनाथ की जय हो । आप भक्त जन के संकट को अतिशीघ्र दूर कर देते हैं । जो आपका मन से ध्यान करता है ,वह सुन्दर फल भोगने के काबिल होता है, तथा उसके मन से दुःख दूर चला जाता है, और सुख-सम्पत्ति से उसका घर परिपूर्ण हो जाता है, एवं शारीरिक कष्ट भी मिट जाते हैं, ऐसे ओंकारनाथ भगवान की जय हो ।

हे भगवन ! आप ही मेरे माता हो, आप ही पिता हो, मैं और किसके शरण में जाऊँ, आपके बिना दूसरा मेरा कोई नहीं है, जिसकी मैं आशा करुँ । हे ओंकारनाथ आपकी जय हो ।

हे प्रभु ! आप इस संसार के पूरक हो, आप परम आत्मा हो, सबके मन की बात को जानने वाले हो, आप पूरे जगत के परमेश्वर हो, एवं सबके स्वामी हो । हे ओंकारनाथ आपकी जय हो । आप हमारे पालनकर्ता हो तथा करुणा के सागर भी आप ही हो । मैं मूर्ख हूँ, खल हृदय वाला हूँ, हमारा भरण-पोषण करने वाले हे प्रभु हम पर कृपा करो । हे ओंकारनाथ आपकी जय हो !

हे प्रभु ! आप अगोचर हो (सबसे आगे चलने वाले हो) सबके प्राणों के मालिक हो और मैं नीच बुद्धि वाला इंसान हूँ, हे दया के सागर ! मैं किस तरह आप से मिलूँ । आप गरीबों के बन्धु हो, सभी दुःखों का निवारण करने वाले हो, सब के रक्षक हो ।

हे करुणा के सागर, मैं तुम्हारे द्वार पर खड़ा हूँ, अपना आशीर्वाद रुपी हाथ उठाकर हमें सभी पापों से मुक्त कर दो एवं इस हृदय में जितने भी

गलत विकार हैं उन्हे मिटा दो । शिवानन्द स्वामी कह रहें हैं कि जगदीश भगवान की आरती जो भी गाता है,सुख-सम्पत्ति उसके पास आ जाता है ।

श्री विष्णु स्तुति

जिनकी आकृति अतिशय शान्त है, जो शेषनाग की शय्या पर शयन किये हुए हैं, जिनकी नाभि में कमल है, जो देवताओं के भी ईश्वर और सम्पूर्ण जगत के आधार हैं, नील मेघ के समान जिनका वर्ण है, अतिशय सुन्दर जिनके सम्पूर्ण अंग हैं, जो योगियों द्वारा ध्यान करके प्राप्त किये जाते हैं, जो सम्पूर्ण लोकों के स्वामी हैं, जो जन्म -मरण रूप भय का नाश करने वाले हैं, ऐसे लक्ष्मीपति, कमलनेत्र भगवान श्री विष्णु को हम (सिर से) प्रणाम करते हैं ।

---

visit www.astrogyan.com for more aarthi's, free indian astrology horoscope charts & predictions.
all information © since 2000, Aks Infotech Pvt. Ltd., portal designed & developed by Pintograph Pvt. Ltd.